क्या भूत-प्रेत सचमुच होते हैं?

जी, हाँ! भूत-प्रेत निश्चित रूप से होते हैं, चाहे कोई माने या न माने। परंतु यह निर्विवाद सत्य है क्योंकि प्रकृति का बड़ा सीधा सा नियम है कि जो भी इसमें भौतिक रूप से मौजूद है, उसका सूक्ष्म स्वरूप के बिना अस्तित्व हो ही नहीं सकता। सजीव-निर्जीव हर वस्तु का सूक्ष्म स्वरूप इस संसार में मौजूद है। शरीर समय के साथ नष्ट हो जाता है, परंतु उसके भीतर निहित आत्मतत्व कभी नष्ट नहीं होता, वह हजारों जन्मों के अच्छे-बुरे संग्रहीत संस्कारों के साथ समय, आवश्यकता एवं मोह बंधनानुसार पुनः दूसरा शरीर, आकृति, स्वरूप ग्रहण कर लेता है, परंतु जब तक वह दूसरा शरीर ग्रहण नहीं करता वह भूत-प्रेत की योनि में स्थिर रहता है। संस्कारों के अनुरूप इनके अलग-अलग स्तर होते हैं। सामाजिक एवं आसक्ति वाली आत्माएँ निम्न जगत में विचरण करती है, अधिकतर वहीं होती हैं जहाँ इनकी आसक्ति एवं मोह-बंधन होता है। ऐसी ही आत्माएँ कमजोर, भावुक आभामंडल वाले लोगों (जिनकी प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है) पर हावी होकर अपनी नकारात्मक प्यास को बुझा रही होती हैं। सात्विक आत्माएँ, बोझ-रहित होकर उच्च (दिव्य) प्रकाश जगत में विचरण करती हैं, इन्हें दिव्यात्माएँ कहा जाता है। इन्हें भूत-प्रेत की योनि में नही गिना जाता-निम्न जगत की दुरात्माओं को ही केवल भूत, प्रेत, डायन, खाबीज, जिन्न, स्पीरिट, घोस्ट जैसे शब्दों से पुकारा जाता है। परंतु भौतिक जगत में कोई रूप ग्रहण करने की या किसी को सताने की, डराने की या काम में बाधा डालने की कोई ताकत नहीं होती। ये अपने होने का आभास या तो विशेष तरंगों के रूप में या हमारे शरीर पर अधिकार कर अपने आप को अभिव्यक्त करती हैं। परंतु भूत-प्रेत कभी अंधेरे में या एकांत जगहों पर हमें डराते नहीं हैं। हमारा सारा डर बचपन में सुनाई गई कहानियों एवं फिल्म, टीवी पर दिखाए जाने वाले काल्पनिक दृश्यों के कारण है अन्यथा भूत-प्रेत को अनुभव करना बहुत मुश्किल है, करोड़ों में किसी अतिसंवेदनेशील शरीर को ही ये अनुभव में आते हैं या दिखते हैं। अधिकतर लोग तो अपने डर, विश्वास एवं कल्पनाओं से ही भूत पैदा कर लेते हैं।

भूतों के संबंध में उठने वाले प्रश्न

● क्या भूत-प्रेत की आकृति मानव की तरह होती है?

भूत-प्रेत एक ऊर्जा शरीर है, आत्मिक शरीर है, जो सूक्ष्म है, जो अदृश्य अवस्था में हैं। इनकी उपस्तिथी का अनुभव वही लोग कर पाते है जो अति संवेदनशील है, क्लायरवोंट है, इनकी उपस्तिथी सूक्ष्म तापमान मापने वाले यंत्रो से मापी जा सकती है। इनकी आकृति धुंए की तरह होती है। कभी कभी मानव शरीर की तरह दिखने वाली एक सफेद धुंए जैसी आकृति होती है।

● क्या भूत-प्रेत मानव की तरह कपड़े पहनते हैं?

अक्सर फिल्मों में हम देखते है कि आत्माएँ कपड़ों में होती है, विदेशी आत्माएँ सूट-बूट पहने होती हैं, पायजामा पहने होती हैं, आदिवासी आत्माएँ पेड के पत्तें पहने होती है, नंगी और काली होती हैं। ये सब फिल्मी बाते हैं सत्य नहीं, अगर आत्माएँ कपड़े पहनेंगी तो रूई कहाँ पैदा करेंगी, कहाँ बुनवायेंगी, कौन सी क्वालिटी पहनेंगी, कॉटन, सिल्क, जॉरजेट या टेरीकॉट कौन सी कंपनी का पहनेंगी, इस्त्री कहाँ करवायेंगी, ड्राई क्लीन कहाँ करेंगी, कौन सा साबुन उपयोग करेंगी। इसी तरह इनके बाल कैसे बढ़ते होंगे, किस शैंपू से धोती होंगी, कौन सी कंघी उपयोग करती होंगी, कौन से हेयर ड्रेसर या ब्यूटी पार्लर पर जाती होंगी क्योंकि इनके बाल, नाखून, भौहें सलीके से कटी हुई होती हैं। कई आत्माएँ तो लिपस्टिक भी लगाती हैं। आप खुद समझ लें, सच्चाई क्या है!

● क्या भूत-प्रेत होते हैं, क्या सचमुच उनका कोई आस्तित्व होता है?

जी, हाँ! शत-प्रतिशत भूत-प्रेत होते है, क्योंकि अगर भौतिक शरीर होता है तो सूक्ष्म शरीर भी अवश्य होता है। जो भी संसार में भौतिक आकार हैं उनका सूक्ष्म आकार भी अवश्य है। ये अकाट्य सत्य है, जब शरीर नष्ट हो जाता है तो उसका सूक्ष्म स्वरूप पूरी तरह जीवित रहता है। इसलिए हर जीव की आत्मा चाहे मनुष्य हो या जानवर, हरेक की सूक्ष्म ऊर्जा इस ब्रह्माण्ड में मौजूद है।

● क्या भूत-प्रेत सताते है या तंग करते हैं?

भूत-प्रेत आत्माएँ चूंकि सूक्ष्म तरंगों के रूप में होती है इन तरंगो को आप अनुभव कर सकते है कि कोई यहाँ है परंतु वह सब कुछ देखती है अनुभव करती है, लेकिन भौतिक स्तर पर कुछ भी करने की उनकी कोई क्षमता नही होती। ये हमें सूक्ष्म स्तर पर ही संपर्क कर सकती हैं, जैसे सपनों में, बेहोशी में या सम्मोहन की गहरी शांत अवस्था में जब हमारी चेतना एस्ट्रेल-ट्रेवल करती हैं या पूर्व जन्मों में जाती हैं तब हम स्वयं भी ब्रह्माण्ड की किसी भी आत्मा के साथ संपर्क कर बातचीत कर सकते है या आप चाहे तो वह आपसे भी बातचीत कर अपनी भावनाएँ, इच्छाएँ, मार्गदर्शन प्रदर्शित कर सकती हैं।

९९ प्रतिशत भूत-प्रेत-आत्माएँ कभी किसी को तंग नही करती, अगर ऐसा होता तो हमारी आत्मा को दुःख पहुँचाने वाले, रिश्तेदार, नेता, गुंडे, चोर, खूनी, डाकू, लालची व्यापारी, अत्याचारी राजा या मालिक के आस-पास सबसे ज्यादा दुःखी आत्माएँ भटककर इन्हें रात-दिन तंग करती, इन्हें कभी चैन से सोने नही देती, पल-पल जीना हराम कर देती। लेकिन ऐसा कभी नही होता - हाँ यही दुःखी आत्मा अगले जन्म में इनके संपर्क में आकर अपने दुःख, नुकसान या अत्याचार का खूब जमकर बदला लेती हैं। हमें तंग करने के लिये या सताने के लियें इन्हे भौतिक शरीर का सहारा लेना ही पड़ता है।

एक प्रतिशत ऐसी सांसारिक लगाव वाली नकारात्मक आत्माएँ जरूर होती हैं, जिन्हें च्वसजमतहमपेज दुरात्माएँ कहा जाता हैं। ये घर, जगह, धन, परिवार से बहुत ज्यादा लगाव रखने के कारण अपने होने का बार-बार एहसास दिलाती हैं और कई दुरात्माएँ तो भौतिक सामान उठा-पटक कर हमें तंग कर देती हैं, परंतु ऐसी आत्माओं का अनुभव करोड़ों में किसी एक परिवार को होता है। रेकी चिकित्सा एवं तकनीक से इन आत्माओं को मुक्त किया जा सकता है या हम पूरी तरह सुरक्षा कवच में बंधकर पूरी तरह सुरक्षित रह सकते हैं हमनें ऐसे प्रयोगों में सफलता पाई है। अंत में मूल सच्चाई तो ये है कि इस ब्रह्माण्ड में अरबों-खरबों आत्माएँ भूत-प्रेत या अन्य सूक्ष्म ऊर्जा के रूप में मौजूद है लेकिन एक भी आत्मा न किसी को तंग करती है, न किसी को सताती है।

भूत-प्रेत का डर सिर्फ एक मानसिक रचना है।, ऐसा नही है कि भूत-प्रेत ही नही होते, अवश्य होते है परंतु लाखों में किसी एक को उसका अनुभव होता है, खास कर उन लोगो को होता है जिनके घर में मृत्यु के बाद बहुत ज्यादा मोह और आसक्ति वाली मृतात्माएँ अपने वहाँ होने का बार-बार एहसास दिलाती हैं। जंगल, खंडहर, सुनसान जगहों में दिखने वाले भूत-प्रेत अधिकतर अपने मानसिक डर से रचित भ्रम हैं। जंगल, खेत एवं अन्य अंधेरी जगहों पर रहने वाले आदिवासी या गाँव वाले लोग घनघोर अंधेरे में सालों से जी रहे होते है उनके मुँह से भूत-प्रेत की कहानियाँ बड़ी मुश्किल से कभी-कभी सुनाई पड़ती हैं। इन कहानियों का कोई ठोस आधार नही होता। मनगढ़ंत अफवाहें ज्यादा होती हैं। हमारे भूत-प्रेत का डर हमारे कानों में पड़ने वाली भूत-प्रेत की कहानियाँ हैं। डरावनी फिल्में, एवं उपन्यास है। अगर हमें बचपन से ही भूत-प्रेत की कहानियाँ सुनाई ही न जाएँ तो हमें भूत-प्रेत का कभी अनुभव नही होगा।

● क्या भूत-प्रेत अधिकतर श्मशान घाट में होते है?

जी, नहीं! भूत-प्रेत सिर्फ श्मशान घाट में ही नहीं होते, बाकी जगह हो सकते हैं, शमशान घाट में तो छिलका (अनुपयोगी लाश) जाता है। असली माल (आत्मा) तो वहाँ रहती है जहाँ उसका चिपकाव होता है या एक्सीडेंट होता है। श्मशान घाट भूत-प्रेत के मामले में सबसे सुरक्षित जगह हैं। श्मशान घाट में नकारात्मक, उदासीन, ऊर्जा है, भूत-प्रेत नही, इसलिए आपको वहाँ खुशी महसूस नही होती।

● क्या भूत-प्रेत की डरावनी शक्लें होती है?

भूत-प्रेत की जब शक्ल ही नही होती जो डरावनी या सुंदर होने का सवाल ही नही पैदा होता। वह तो एक परछाईं की तरह, धुंए की तरह एक धुंधली सफेद रोशनी की तरह होती है क्योंकि शरीर छोड़ते ही आत्मा का आकार समाप्त हो जाता है। आकार भौतिक वस्तुओं का होता है, सूक्ष्म का नहीं। बड़े-बड़े दाँत, पुतली-विहिन आँखे, उल्टे पाँव, बिगड़ा हुआ चेहरा, भयंकर आवाजें ये सभी फिल्मों की देन है, परिकल्पनाएँ हैं, हकीकत नहीं!

● क्या भूत-प्रेत हमारे शरीर पर अधिकार करते हैं?

जी, हाँ! कमजोर शरीर, मन एवं आभामंडल वाले लोगो में भूत-प्रेत आत्माएँ प्रवेश कर सकती हैं। उनके ऊपर अधिकार कर उनके साथ रह सकती है। उन्हें तंग करती हैं, उनसे बातें करती हैं, उनका व्यवहार बदल देती हैं। अपनी वासनायें पूरी करवाती हैं। यहाँ तक कि आत्महत्या भी करवा देती हैं, गुंडो, बदमाश, डाकू, चोर, हत्यारे, तांत्रिक प्रबल आत्मशक्ति वाले, आध्यात्मिक साधना एवं भक्ति वाले, सकारात्मक विचारों वाले, सुरक्षा के सूक्ष्म उपाय जानने वाले लोगों से भूत-प्रेत कोसों दूर रहते हैं। कमजोर शरीर, मन एवं आभामंडल का कारण है - गलत व खोखला खान-पान, घातक व्यसन, व्यायाम की कमी, विश्राम की कमी, तनाव, डिप्रेशन, नकारात्मक भावनाएँ, डर, अंधविश्वास इत्यादि।

● भूत-प्रेत आत्मायें सबसे ज्यादा कहाँ निवास करती हैं?

भूत-प्रेत सूक्ष्म ऊर्जा होने के कारण इस ब्रह्माण्ड में कहीं भी हो सकते हैं। परंतु सबसे ज्यादा ये ब्रह्माण्ड में अलग-अलग स्तर (क्पउमदेपवदे) पर होते हैं। संसार में खूब मोह-पाश, आसक्ति एवं अतृप्त वासनाओं वाली आत्माएँ निम्न स्तर पर भटकती रहती है जैसे-जैसे हम सात्विक, सकारात्मक अध्यात्मिक जीवन की ओर प्रगति करते हैं, हमारी आत्मा हल्की होकर ऊँचे स्तर पर उठने लगती है और प्रकाश जगत में प्रवेश करती हैं।

इसके अलावा जिस घर व्यक्ति, परिवार, वस्तु या जगह से आत्मा का खूब लगाव होता है, आत्मा हमेशा उनके पास भटकती रहती है-मुक्त नहीं हो पाती है। बरगद के पेड़ पर भी आत्माएँ निवास करती है-क्योंकि इस पेड पर उन्हें शांति महसूस होती है। जंगल, पहाड़, खंडहर, शमशान एवं एकांत जगहों पर भूत-प्रेत बिलकुल नहीं होते, भूत-प्रेत हमारे अंधेरे के प्रति डर की उत्पत्ति हैं। सुनसान अंधेरी जगहो पर हमें डर लगता है और भूत-प्रेत का जो आभास होता है, वह छोटे से छोटे जीव जंतुओं से लेकर बड़े से बड़े जानवरों के रात में सक्रिय होकर घूमने के कारण, अजीबो-गरीब आवाजें एवं पदचाप सुनाई देती है, दूसरा पेड़-पौधों के घर्षण, वृक्ष, पहाड़, वस्तुओं से टकराकर हवाओं का गुजरना, सूखे पत्ते, घास पर जानवरो का चलना जीव-जंतुओ की डरावनी आवाजें, पानी का बहना या रिसाव, बादलों का गरजना, बरसात की या सर्दी की धुंध , जैसी अनेको प्रकृति-जनित, स्वाभाविक परिस्तिथियाँ हमारे मन में भूत-प्रेत या किसी के होने का डर पैदा करती हैं। शहर का आदमी इन जगहों पर ज्यादा डरता है-गाँव का और जंगली आदमी कम डरता है। और बड़े-बड़े शिकारी, साधु, वैज्ञानिक, खोजी एवं फोरेस्ट अफसर एवं प्रकृति प्रेमी लोग इन भयावह जगहों का आनंद लूट रहे होते हैं। हमारा भूत-प्रेत का डर पूरी तरह बेबुनियाद है। भूत-प्रेत का डर केवल हमारी घोर अज्ञानता है मनगढ़ंत, काल्पनिक विश्वास हैं। ये एक बहुत बड़ी सच्चाई है कि करोड़ो लोगों को जन्म से लेकर मृत्यु तक भूत-प्रेत का कभी रत्ती भर भी अनुभव नहीं होता। विश्व में चंद लोगो को ही यदा-कदा भूत-प्रेत या आत्माओं के अनुभव होते हैं और उसी आधार पर सालों-साल कहानियों के रूप में प्रचलित रहते हैं। इन्ही चंद कहानियों के आधार पर जनता मनचाही कल्पनाओं के जाल खडा कर देती है। भूत-प्रेत अवश्य ब्रह्माण्ड में ऊपर से हँसते होंगे कि हम धरती पर जितने है नहीं, उससे ज्यादा मानव ने कल्पना से पैदा कर लिए हैं।

● क्या भूत-प्रेत हमारी मदद करते हैं?

जी, हाँ! आपके अपने परिवार के मृत सदस्यों की आत्माएँ, पुरखे, सात्विक दिव्य आत्माएँ आपको संकट से बचाती हैं, आपका मार्गदर्शन करती हैं, एक्सीडेंट से बचाती हैं। जो लोग सात्विक जीवन जीते हैं, उच्च विचार रखते हैं, परोपकार करते हैं, जीव-जंतुओं या किसी भी अंजान व्यक्ति की मदद करते हैं, उनके प्राण बचाते हैं, उनकी आत्माओं का आपके साथ कार्मिक बंधन एवं आकर्षण होने के कारण आपको सहयोग, मार्गदर्शन, एवं सुरक्षा देने की पूरी कोशिश करते हैं। इन्हीं पुण्यात्माओं एवं पुण्य-कर्मों के कारण हम अनेक संकट, और दुर्भाग्यपूर्ण परिस्तिथियों से बचे रहते हैं। हमारे संकट में अचानक हमें कोई जो मदद प्राप्त होती हैं या प्राण बचाते हैं ये सब इन्ही आत्माओं के कारण संभव होता हैं। आप जितनी सद्भावना सें लोगो का, जीव-जंतुओ का भला करते हैं, आप अपने लिए उतने ही सुरक्षा गार्ड तैयार करते हैं। जरूरत पड़ने पर, संकट में हमें कोई मदद नही मिलती इसका सिर्फ इतना ही कारण है कि आपनें स्वार्थी जीवन जीया है, दूसरों को कष्ट पहुँचाया है। उनको लूटा है। जीवन के नारकीय कष्ट, बड़ी बीमारियाँ, बड़े संकट भुगतने का सबसे बड़ा कारण भी यही है। सात्विक मृतात्मायें, उच्च गति को प्राप्त

आत्माओं का जब आप आह्वान करते हैं तो आपको हर कदम, हर स्तर पर, हर क्षेत्र में ये आपके आसपास मौजूद रहकर आपका अंतर्प्रेरणा के माध्यम सें मार्गदर्शन करती हैं। नए आइडिया, नए आविष्कार, नई सोच, नए सपने, जो हमारे भीतर बगैर तर्क के अचानक प्रस्फुटित होते हैं, उसका एक मात्र कारण इन दिव्यात्माओं का सहयोग है जिन्हें विदेशों में 'डिवाइन एंजिल' कहा जाता है।

इस संसार में भगवान मदद नही करता, न मार्गदर्शन करता है, न कोई नए आइडिया देता है। भगवान तो संसार की संपूर्ण सत्ता का नाम है, किसी व्यक्ति का नहीं। आपके आसपास जो कुछ अच्छा-बुरा घटता है उसका कारण सिर्फ आपके चुंबकीय कर्म एवं आपसे बंधी हुई अच्छी-बुरी आत्माएँ हैं, जो हम हर पल अर्जित करते हैं।

– डॉ. एन. के. शर्मा

गुरूजी एवं गुरूमाँ ने Zee-News पर

भानगढ़ के भूतों का भ्रम तोड़ा

26 अक्टूबर रात 8 से 10 बजे तक पूरे 2 घंटे Zee-News पर 'भानगढ़ का खौफनाक रहस्य' के नाम से एक विशेष कार्यक्रम में ये दिखाया गया कि गुरूजी एवं गुरूमाँ ने अलवर (राजस्थान) से 70 कीलोमीटर दूर भानगढ़ के भूत-प्रेत का भ्रम तोड़कर वैज्ञानिक यंत्रो से वहाँ के पूरे खंडहर रूपी महल का परीक्षण कर यह सिद्ध कर दिखाया कि भानगढ़ किले में कोई भूत-प्रेत का नामो निशान तक नही है, जबकि भानगढ़ का किला एशिया का सबसे बड़ा भूतो का गढ़ माना जाता है।

अगर गूगल या यू-ट्यूब पर जाकर भानगढ़ फोर्ट के बारे में जानकारी प्राप्त करना चाहेंगे तो सबसे पहले ये ही जानकारी प्राप्त होगी कि भानगढ़ का किला-भूतों का गढ़ है, भूतो से संबंधित अनेक कहानियाँ लिखी हुई मिलेंगी, इस कारण आर्कीयोलोजिकल सर्वे ऑफ इंडिया ने भी इस किले में सूर्यास्त के 6 बजे के बाद प्रवेश पूरी तरह बंद कर दिया है यानि कि भारत सरकार ने भी यह स्वीकार किया है और सुरक्षा की दृष्टि से वहाँ पर प्रवेश सीमित कर दिया है।

21 अक्टूबर को गुरूजी को Zee-News से फोन आया कि अलवर के भानगढ़ फोर्ट में भूतो का वास है जिसको हम आपके ऊर्जा यंत्रो से मापकर सच्चाई जानना चाहते हैं। गुरूजी ने तुरंत इस निमंत्रण को स्वीकार कर लिया और 23 अक्टूबर सुबह 7 बजें Zee-News की पूरी टीम एवं RHF की पूरी टीम लेकर भानगढ़ के किले पहुँच गये। दिन भर एवं रात भर वहाँ रूककर घनघोर अंधेरी डरावनी रात में जहाँ न कोई रोशनी, न कोई आदमी का नामो- निशान था, थी तो सिर्फ जानवरों की डरावनी आवाजें, ऐसे भयानक वातावरण में डॉ. सविता शर्मा ने यूनीवर्सल स्कैनर सें नकारात्मक ऊर्जाओं की एवं जगह की खोज शुरू कर दी। औरा फोटोग्राफी, एनर्जी स्केनर, डाउजिंग रॉड के माध्यम से डॉ. शर्मा, उनके सहयोगी डॉ. रूपिंदर, एवं सुधीर सिंह ने अपने-अपने ढंग से खोजकर Zee-News वालों का मार्गदर्शन करते रहे। उड़ीसा के श्री राजीव पांडा ने क्रिस्टल बॉल गेजिंग एवं अंतर्प्रेरणा के माध्यम से वहाँ की तरंगों को पकड़ने की कोशिश की। इस तरह 2 घंटे में पूरे महल की खोजबीन कर बहुत सारी खतरनाक, नकारात्मक ऊर्जाओं से भरी-जगहों की जानकारी प्राप्त की, सैंकडों चमगादड़ों से जूझे। गुरूमाँ काफी संवेदनशील होने के कारण उन्हें काफी जगह बेचैनी महसूस हुई, इस समय सभी सदस्यों को काफी बेचैनी और भारीपन से गुजरना पड़ा। हालाँकि सबसे संतोषजनक बात ये थी कि वहाँ पर किसी प्रकार का कोई भूत-प्रेत या आत्मा का किसी भी रूप में अनुभव नही हुआ। सालों से चला आ रहा यह भ्रम पूरी तरह समाप्त हो गया कि भानगढ़ भूतो का गढ़ है। भानगढ़ में अगर डर है तो सिर्फ जानवरों का, क्योंकी सूर्यास्त के बाद तेंदुए, सियार, साँप व अन्य जानवरों की हल-चल बढ़ जाती है। अंधेरा होने के बाद ये डर हम सभी को भी था। परंतु रेकी के कारण हम सबके अंदर बहुत हिम्मत बंधी हुई थी। नकारात्मक ऊर्जाओं के प्रभाव से बचने के लिये हम सभी ने काफी चार्ज किये हुये क्रिस्टल अपने साथ रखे थे। सिंबल के माध्यम से अपने आभामंडल को सभी ने प्रबल बना दिया था जिसके कारण काफी आराम से हम सभी सुरक्षित रहकर ऐसे भयानक महल में काम कर पाए।

गुरूजी एवं गुरूमाँ ने पहले भी ऐसे कई भूतहा घरों एवं बिल्डिंगों का मीडिया के साथ निरीक्षण किया है। टीवी, मीडिया को भी ऐसे कार्य में जब भी किसी विशेषज्ञ की जरूरत पडती है तो गुरूजी और गुरूमाँ को ही पहले याद किया जाता है। अब कई मीडिया वाले गुरूजी एवं गुरूमाँ को निमंत्रण दे रहे हैं परंतु गुरूजी एवं गुरूमाँ ने अपने आपको ऐसे कार्यक्रमों से बचा रखा है ताकि गुरूजी और गुरूमाँ 'रेकी गुरू' के बजाय 'भूत भगाओ गुरू' न कहलाने लग जाएँ।

Zee-News का यह कार्यक्रम बहुत पसंद किया गया और Zee-News के सारे प्रांतीय और विदेश नेटवर्क पर इस कार्यक्रम को प्रसारित किया गया। भारत ही नहीं विश्वभर से हमें लगातार बधाईयों के फोन आ रहे हैं।

अंत में यह भ्रम हमेशा के लिए समाप्त हो गया है कि भानगढ़ में भूत-प्रेत जैसी कोई चीज है। बस है तो सिर्फ नकारात्मक ऊर्जाओं का प्रकोप। अगर वहाँ पर प्रकाश की, रहने की, सफाई की, पेड़-पौधों की अच्छी व्यवस्था की जाए तो सारा किला सकारात्मक ऊर्जाओं से फिर महक सकता है।

इस कार्यक्रम की पूरी विडियो आप Youtube पर Bhangarh Zee-News के नाम से देख सकते हैं।